M. T. B. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library
No. Ref.
Ser. 1507
Title Sri Sukta

1507

Incomplete

:	:	S'ri Sukta	: Title
:	:		: Author
:	:		: Editor
:	:		: Year, Vols.
:	:		: Publisher
1507 :	:		: Remarks

श्रीसूक्तप्रारंभः॥

नित्यपुष्टांकरीषिणी ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामि
होपव्हये श्रियं ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः
सत्यमशीमहि ॥ पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः
श्रयतां यशः ॥२॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि
संभव कर्दम ॥ श्रियं वासय मे कुले मातरं प
द्ममालिनीं ॥ आपस्रजंतु स्निग्धानि चिक्ली
त वस मे गृहे ॥ नि च देवीं मातरं श्रियं वास
य मे कुले ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हे
ममालिनीं ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवे
दो मम वह ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टीं पिंगलां